ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 71 बुलेटिन अवधिः 8–12 सितम्बर, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 7 सितम्बर, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	08/09/2018	09/09/2018	10/09/2018	11/09/2018	12/09/2018
वर्षा (मिमी0)	15	15	15	25	25
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	35	35	33	33	34
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	25	25	24	24	23
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	घने बादल	घने बादल	मध्यम बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	80	90	90	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	45	50	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	006	004	004
वायु की दिशा	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

आगामी पांच दिनो में हल्की से मध्यम वर्षा होने के साथ आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (31 अगस्त – 6 सितम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में घने से पूर्णतः बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 29.0 से 32.3 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 24.4 से 25.8 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 89 से 97 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 69 से 89 प्रतिशत एवं हवा 2.0 से 6.7 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–उत्तर–पूर्व व पूर्व–दक्षिण–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

- खाली खेत मे तोरिया (लाही) की बुवाई इस माह के प्रथम पखवाड़े में करें। तोरिया कम अवधि की फसल है। अतः तोरिया की कटाई के बाद गेहूँ की विलम्ब दशा में बुवाई कर सकते है।
- तोरिया कम समय की फसल है। इसे संरक्षित नमी में दो–तीन जुताई कर खेत तैयार करें। उन्नतशील किस्मों–उत्तरा, पीटी 303, पीटी 30, पंत तोरिया–508 एवं भवानी आदि है। बीज दर 4 किग्रा/है0 रखें। बुवाई पंक्तियो में 30 सेमी की दूरी पर 3–4 सेमी की गहराई पर करनी चाहिए।
- तोरिया की बुवाई से पूर्व स्वयं उत्पादित बीजो का शोधन बीज जनित रोगो से बचाव हेतु एप्रोन 35 एस डी 4 ग्राम/किग्रा बीज की दर से करें।
- असिंचित क्षेत्रों में 50:30:20 N:P:K/है0 का प्रयोग बुवाई के समय करें। सिंचित क्षेत्रों के लिए 90:40:20 N:P:K/है0 का प्रयोग करें। 1/2 नत्रजन, सम्पूर्ण फाम्फोरस व पोटाश बुवाई के समय तथा बुवाई के 25–30 दिन बाद 1/2 नत्रजन का टाप ड्रेसिंग करें।
- मक्का, ज्वार एवं बाजरा फसलों में पुष्प निकलने तथा दाना पड़ने का समय है तथा इस समय खेत में पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। अतः वर्षा न हो रही हो तो आवश्यकतानुसार सिचांई करें। अतिरिक्त जल हेतु उचित जल निकास की व्यवस्था रखें ताकि पानी खेत में जमा न हो।
- इस समय धान में बाली बनने या बाली निकलने की अवस्था में है और धान की यह अवस्था पानी की कमी के प्रति अति संवेदनशील है तथा इससे बालियों के आकार एवं दानों की संख्या एवं बीज भार में कमी आती है। अतः खेत में पर्याप्त नमी बनायें रखें एवं खेत से पानी अदृश्य होने के एक दो दिन बाद पुनः सिंचाई करें।
- मक्का की फसल मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मक्का में पर्णच्छद अंगमारी के नियंत्रण हेतु निचली पत्तियो को हटा दें तथा प्रोपीकोनाजोल 1 मिली/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- धान में, जीवाणुज पर्ण अंगमारी हेतु खेत मे खड़े पानी को निकाल दें तथा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 15 ग्राम तथा कॉपर आक्सीक्लोराइड 500 ग्राम के मिश्रण को 500 लीटर पानी मे घोल बनाकर /है0 की दर से छिड़काव करें।

उद्यान प्रबन्धः

- अरबी व अदरक की फसल हेतु जिन क्षेत्रों में ज्यादा वर्षा हुई है वहाँ पानी का निकास करें व जहाँ वर्षा नहीं हुई है वहाँ सिंचाई कर खरपतवार निकालें एवं मिट्टी चढ़ाएँ।
- अरबी की फसल में चूसनें वाले कीड़ों की रोकथाम हेतु एमिडाक्लोरपिड + डाईएथीन 45, 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव दस दिन के अंतर से करें।
- पिछलें माह बोई गई बैगन की फसल में निराई–गुड़ाई करें। नत्रजन की बची हुई आधी मात्रा का एक चौथाई हिस्सा खेत में टॉप ड्रैसिंग के रूप में डालें और शेष एक चौथाई नत्रजन का 60–65 दिन के अंतराल पर खड़ी फसल में टॉप ड्रैसिंग के रूप में दें।
- फूलगोभी में कीड़ों से बचाव हेतु मैटासिस्टॉक या एमिडाक्लोरपिड 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।
- टमाटर एवं मिर्च की फसल मे जड़ एवं तना संधि सड़न रोग के नियंत्रण हेतु ट्राईकोडरमा 10 ग्राम/लीटर या कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर जड़ो की सिंचाई करें।
- कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर पीले–भूरे धब्बे दिखाई पड़ने मेन्कोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मिर्च की फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं फल सड़न की समस्या हेतु कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी की फसल मे पत्तियो की शिराये पीली पड़ने पर संक्रमित पौधो को उखाड़ दे तथा रोगवाहक कीटो के नियंत्रण हेतु किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।

❖ टमाटर की फसल मे पत्तियो पर धब्बे पड़ने एवं झुलसने पर मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

❖ पपीतें के बगीचों में जल निकास का उचित प्रबंध करें।

❖ जैसा कि आंवले में फल वृद्धि शुरू हो गयी है अतः अच्छी गुणवत्ता के फल हेतु बोरैक्स 200–250 ग्राम प्रति वृक्ष थालों मे प्रयोग करें।

❖ इस माह में जाला बनाने वाला टेन्ट कैटरपिलर कीट का भी प्रकोप होता है इसलिए जाला छुड़ाने वाले यंत्र से जाले को साफ करे। एवं प्रभावित प्ररोहो को काटकर कीड़ो सहित जला दे। अगर प्रकोप अधिक हो तो कीटनाशको जैसे 0.2 प्रतिशत कार्बरिल या 0.05 प्रतिशत क्वीनालफॉस का छिड़काव करे।

❖ रेडरस्ट तथा एन्थ्रेक्नोज के नियत्रंण हेतू 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सी क्लोराइड (3.0 ग्रा0 प्रति ली0) का छिड़काव करे।

पशुपालन प्रबन्धः

❖ इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ग्ञामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।

❖ इस मौसम में भेड़ो को एनटैरोटाक्सीमिया रोग लग जाता है जिसके कारण उनके आतों में सूजन आ जाती है। भेड़ों को इस रोग से बचाने हेतु पशु चिकित्सक की सलाह से टीका लगवाएं।

❖ पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।

❖ पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूंदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।

❖ नमी की वजह से आहार में फफूंदी लग जाती है जिससे आहार में पोषक तत्व की कमी हो जाने से अपलाटॉक्सीकोशिश नामक बीमारी हो जाती है। इससे मुर्गियों के पेट में कीड़े पड़ने से अण्डा देने की क्षमता घट जाती है ऐसी मुर्गियों को पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा महीने में एक बार अवश्य दें।

❖ पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।

❖ पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से यूटरोटोन/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।

❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।

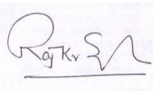

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर